

वीर कुँवर सिंह





वीर कुंवर सिंह का जन्म 1777 को बिहार के भोजपुर जिले के जगदीशपुर गांव में हुआ था। इनके पिता बाबू साहबजादा सिंह प्रसिद्ध शासक भोज के वंशजों में से थे।
इन्होंने 23 अप्रैल 1858 में, जगदीशपुर के पास अंतिम लड़ाई लड़ी। वहाँ से अपने किले में लौटने के बाद 26 अप्रैल 1858 को इन्होंने वीरगति पाई।



प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के समय कुँवर सिंह की उम्र 80 वर्ष की थी । वृद्धावस्था में भी उनमें अपूर्व साहस, बल और पराक्रम था । उन्होंने देश को पराधीनता से मुक्त कराने के लिए दृढ संकल्प के साथ संघर्ष किया । वे इतने वृद्ध होते हुए भी अंग्रेजों से लोहा लेते हुए तनिक भी घबराए नहीं । अपनी पूरी उम्र उन्होंने युद्ध करने व स्वतंत्रता संग्राम में ही व्यतीत कर दी।

1857 की क्रांति

- ▶ 1857 की क्रांति भारत को आज़ाद करवाने का प्रथम संघर्ष था ।
- ▶ अंग्रेजों की अन्यायपूर्ण नीति के कारण भारतीय जनमानस के मन में अंग्रेजों के प्रति आक्रोश था ।
- ▶ 1857 में अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए हिंदू और मुसलमानों ने मिलकर कदम बढ़ाया ।
- ▶ 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में वीर कुँवर ने अंग्रेजों के विरुद्ध बिहार के क्रांतिकारियों का नेतृत्व किया ।

- नाना साहब, रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे और बेगम हजरत महल जैसे शूरवीरो ने अपने – अपने क्षेत्रों में अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किया ।
- बिहार में दानापुर के क्रांतिकारियों ने भी 25 जुलाई सन 1857 को विद्रोह कर दिया और आरा पर अधिकार प्राप्त कर लिया । इन क्रांतिकारियों का नेतृत्व वीर कुँवर सिंह कर रहे थे।
- अंग्रेजों की तुलना में कुँवर सिंह के पास साधन सीमित थे परन्तु वे निराश नहीं हुए. उन्होंने क्रांतिकारियों को संगठित किया । उन्होंने छापामार युद्ध की नीति अपनाई और अंग्रेजों को बार – बार हराया ।

वीर कुँवर सिंह की सांप्रदायिक भावना

- ▶ वे एक सांप्रदायिक व्यक्ति थे । इब्राहीम ख़ाँ और किफ़ायत हुसैन इनकी सेना में उच्च पदों पर आसीन थे।
- ▶ उन्होंने हमेशा हिन्दुओं और मुसलमानों में सांप्रदायिक सद्भावना को रखते हुए हिन्दुओं के लिए पाठशाला व मुसलमानों के लिए मक़तब बनवाए।

वीर कुँवर सिंह के व्यक्तित्व की विशेषताएँ

- ▶ शूरवीर- कुँवर सिंह शूरवीर व्यक्ति थे। उनकी शूरवीरता ही थी कि उनके वृद्ध होने पर भी 'आरा' क्रान्ति का महत्वपूर्ण केन्द्र था।
- ▶ साहसी – वीर कुँवर सिंह एक साहसी व्यक्ति थे। इनका साहस ही था कि उन्होंने अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए थे।
- ▶ स्वाभिमानी व्यक्ति – कुँवर सिंह जी स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उनका स्वाभिमान ही था कि उन्होंने अंग्रेजों की पराधीनता के स्थान पर उनके विरुद्ध खड़ा होकर सर उठा कर जीना स्वीकारा।



बुद्धिमान एवं चतुर – अपनी चतुरता व सूझबूझ के कारण ही एक बार कुँवर सिंह जी को गंगा पार करनी थी पर अंग्रेजी सरकार उनके पीछे लगी थी। उनसे बचने के लिए उन्होंने ये अफवाह उड़ा दी कि वे बलिया से हाथियों पर अपनी सेना के साथ नदी पार करेंगे परन्तु किया इसका उल्टा उन्होंने शिवराजपुर से नदी पार कर ली और अंग्रेजों को मूर्ख बना दिया था। छापामार युद्ध में तो उनका कोई सानी नहीं था।

दानवीर व दयालु – कुँवर सिंह स्वभाव से दानवीर व दयालु प्रवृत्ति के थे उनकी स्वयं की माली हालत ठीक नहीं थी परन्तु फिर भी वे निर्धन व्यक्तियों की मदद किया करते थे उन्होंने उनको मार्गों, कुओं व तालाबों का निर्माण करवाया था।